

ओ३म्

वनिताहितैषी ।

मासिक पत्रिका ।

भाग्यवती देवी सम्पादित

एकै धर्म एक ब्रत नेमा । काय बचन मन पति पद प्रेमा ।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।
उठिये जागिय तात गहिय श्रेष्ठ मर्य्याद को ।
भयो उदौत प्रभात अब सोये खोइय बृथा ॥

भाग २] चैत्र १९५१ सचेंडी १५ अप्रैल सन् १८९४ [अंक ४

सार नियम । दाम बारह आना साल वेल्यूपेबिलपारसल द्वारा लिया जाता है । विज्ञापन छपाई ।/, सतर० बंटाई ५/ दश कापी के ग्राहक को एक प्रति मुफ़ । उपदेशकों को ५ ग्राहक बनाने पर एक प्रति मुफ़ । पत्र व्यौहार नागरी भाषा में कीजिये । विशेष सब बातें पत्र द्वारा ते करिये ॥

पता० संपादिका वनिताहितैषी
सचेंडी जिला कानपूर ।

विज्ञापन ।

पुस्तकें । नारी सुदशाप्रवर्तक चार भाग १/ कामिनीकल्पद्रुम ॥/ वनिताविनोद ।/ मनोरंजनी ।/ यह सब पुस्तकें वनिताहितैषी कार्य्यालय सचेंडी से मिल सकती हैं । ग्राहकों से डाक व्यय नहीं लिया जायगा । बांटने वालों से और भी किफ़ायत होगी ॥

निवेदन ॥ हमारी इच्छा है कि स्त्रियों की उपयोगी सब पुस्तकें और दूसरी चीजें भी इस कार्य्यालय में मौजूद रक्खें अतएव निवेदन है कि ग्रन्थ कर्ता सुजन तथा व्यापारी महाशय उन वस्तुओं की सूची से हमको विज्ञप्त करें ॥

भारतजीवन प्रेस बनारस ।

ओ३म्

नमस्ते जगन्मंगलायास्य मूर्ते ।

बनिताहितैषी ।

मासिक पत्रिका ।

सचेंडी. तारीख १५ अप्रैल १८९४ ई०

यांमेधान्देवगणाः पितरश्चोपासते । तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

आओ प्यारे भाई बहिनों ! हम सब मिल कर उसी मेधा नाम धारणावती बुद्धि के प्राप्त करने का उद्योग करैं जिसके बल से हमारे देव पितर पूर्वज गण सब तरह की सिद्धियों को प्राप्त होते थे। क्योंकि उसी के द्वारा हमारे सब काम, सब इ-च्छायें, और सब मनोर्थ सुगम-ता से सिद्ध हो सकते हैं।

यदि हम सब सुखों के मूल कारण के लिये भी परिश्रम और उद्योग न करैं तो हमारी सदृश मूर्ख और कौन है । क्योंकि बिना परिश्रम और यत्न में क्या कुछ हो सकता है ?

संसार में किफ़ायत भी एक ऐसी चीज है जिसको सबही चाहते हैं। सबकी इच्छा होती है कि हमको थोड़ेही में बहुत कुछ प्राप्त हो जाय थोड़े दाम खरचने पर बहुत चीज मिलै। थोड़ेही साधन से बहुत सिद्धि प्राप्त हो । इत्यादि क्या क्या गिनावैं लोगों की यहां तक भी इच्छा होती है कि कोई ऐसा यत्न हो जिसमें थोड़ेही में हमें ईश्वर पर्य्यन्त प्राप्त हो जाय। सर्वनियन्ता ने हमे ऐसा उ-पाय भी बताया है। उसने सब कुछ प्राप्त करने का अत्यन्त सु-गम साधन भी बतला दिया है।

(गजल) भजन ।

जो है अजन्मा और अमर है न्यायी औ सर्वेश्वर ।
रखता है वह सबकी खबर हर वक्त उसका ध्यान धर ॥
जिसने रचा संसार है गति उसकी अगम अपार है ।
सबका वही आधार है हर वक्त उसका ध्यान० ॥
जग रचता बारम्बार है वही सबका पालनहार है ।
करता वही संसार है हर वक्त उसका ध्यान० ॥
रहता हमेशा एक रस जिसके न नाड़ी और न नस ।
वह है नहीं इन्द्रिय के बस हर वक्त उसका ध्यान० ॥
जो उसका ध्यान लगावेगा वह सुखद पद को पावेगा ।
जग में न वह दुख पावेगा हर वक्त उसका ध्यान० ॥
बलदेव अब तो जाग तूं, गफलत की निद्रा त्याग तूं ।
प्रभु के चरण में लाग तूं हर वक्त उसका ध्यान० ॥

लोहा और उसका मोल ।

जब लोहा खान में रहता है तब उसके और माटी के मोल में कुछ अन्तर नहीं होता । वही जब खान से निकाल कर साफ़ किया जाता है तब उसका भाव रुपयों के हिसाब हो जाता है फिर उसी लोहे को और भी ठीक करके चाकू कैंची सूई आलपीन आदिक बनावैं तो मोल में कितना अधिक बढ़ जाता है । और फिर भी कितना और ज़ादा जब उसी की एक उत्तम घड़ी अथवा आबदार तरवार बनाई जाकर भूपति

को अर्पण की जाय !

प्यारी बहिनो ! अब मिलान करो । खान के लोहे और तरवार अथवा घड़ी के लोहे मिलावो । दोनों एकही खान से पैदा हुवे वास्तव में एकही बस्तु हैं और नाम भी वही लोहा अब तक बाकी है फिर मोल में, आबताब में और काज में इतना अन्तर क्यों ? यही लोहा जो खान से निकलने पर केवल बोझ मात्र था अब घड़ी रूप में होकर समय जैसे अनमोल पदार्थ का बताने वाला हो गया और तलवार रूप में होकर प्रजा की रक्षा में दूध का दूध पानी का पानी करने में न्यायी महीप के आधीन तत्पर भया । सो इतने बड़े परिवर्तन (रदबदल) का निमित्त (सबब) क्या है ? उत्तर तो बिलकुल सहज और साफ है कि उसका मोल कारीगर के सबब इतना बढ़ गया । वही खान का लोहा एक साधारण लोहार के हाथ में जाकर निहाई हथौड़ा खुरपी कुल्हाड़ी बना था दूसरे कारीगर के हाथों वही लोहा चाकू कैंची आदि रूप में होकर मोल में अधिक बढ़ गया तथा वही फिर घड़ीसाज वा दूसरे सुयोग्य कारीगर के हाथ पड़ अनमोल बस्तु रूप में राजा महाराजाओं का सहकारी हुआ ।

प्यारी बहिनों ! और भाइयो ! जब कि संसारी सब चीज़ों का सुधार औ बिगाड़ कारीगर के ही आधीन है तो बढ़ती के हेतु उत्तम कारीगर की आपको कितनी ज़रूरत है एवं उसकी कितनी कदर करनी दरकार है आप स्वयं जान सकते हैं । अब प्रश्न

यह है कि क्या मानुषीसृष्टि का भी सुधार इसी तरह से हो सकता है ? यदि हो सकता है तो किनके द्वारा ? हम पहिले किसी अंक में लिख चुकी हैं कि माता के सम्पूर्ण विचार औ कर्तव्य गर्भस्थ बालक पर पूरा असर करते हैं अतएव माताही अपने बच्चे को मन चाहा बनाने में समर्थ है । अब माता का जो कि मनुष्य सृष्टि के अनमोल बनाने वाली कारीगर है कितनी योग्य और विद्वान होना दरकार है सो भी प्रगट है ।

प्यारी बहिनौ ! तुमही अपनी सन्तान को सब से जादा कीमती बना सकती हौ यदि विद्या औ बुद्धि द्वारा उत्तम कारीगर बनो ॥

सुख ।

श्रीमती जानकीदेवी हाथरस लिखित।

प्रिय भगिनी गण !

जिस विषय पर मैंने आज लेखनी उठाई है वह वेदों का सार शास्त्रों का मूल मंत्र मानव जीवन का फल है और जीव मात्र देवता ऋषि मुनि इत्यादि जिसके इच्छुक हैं आज आपकी भेंट है ।

सुख किसको कहते हैं और वह क्योंकर प्राप्त होता है ?

सुख वह पदार्थ है जो स्पर्श करने देखने और सूंघने इत्यादि में नहीं आता किन्तु एक मानासिक अनुभव है । आनन्द हर्ष इत्यादि उसके पर्य्यायी शब्द हैं और अत्यन्त सुख का ही नाम मोक्ष है । मन की इच्छाओं के अनुकूल पदार्थ प्राप्त होने से जीव सुख मानता है और प्रतिकूल से दुख, यह एक स्वाभाविक नियम है । परन्तु इस नियम

में ज्ञानाज्ञान भेद से प्रायः विघ्न हो जाता है । मन की इच्छा जो होती है सो विद्या और अनुभव पर निर्भर रहती है। यदि अज्ञान बश मन में अशुभ इच्छा उत्पन्न हुई और मन ने शुभ जान कर उसका अनुगमन किया तो सुख के स्थल दुख प्राप्त होगा। जैसे चोर द्रव्य चुराकर लाने से बड़े सुख की आशा रखता है परन्तु प्रायः फल महा दुख का मिलता है जेलखाने जाना पिटना इत्यादि । अतएव सारांश यह है कि शुभ कर्मों का फल सुख और अशुभ कर्मों का फल दुख होता है । अतः शुभाशुभ कर्मों का जानना परमावश्यक है । परन्तु शोक ! वर्तमान में प्रायः स्त्रियों को देख कर मेरा हृदय विदीर्ण होता है । आठ पहर चौंसठ घड़ी में कोई क्षण में उनका शुभ चिन्तन में न देख कर उनकी चर्य्या का एक दृश्य निवेदन करती हूं और यथा बुद्धि उसकी समालोचना करके उस पर अपना मत प्रकाश करती हूं आशा है कि पंडिता बहिन मुझे क्षमा करैंगी क्योंकि एक साधारण बात के समझाने में आपका इतना समय व्यर्थ व्यय किया है ॥

प्रथम दृश्य ।

(स्थान लाला नन्नूमल की हवेली, पड़ोसिन सोहनी मोहनी तुलसा और सीता बैठी हैं)

सोहनी । (तुलसा से) क्यों बहेना, कहा कर आई ?

तुलसा । कर कहा आई हूं मेरे तो करम फूट गये । सबेरेहीं वाकी (पति) तोनर में आग लगायवे कूं चहिये। सूरज निकरवे की देर नांय होय और हल्ला मचाय दे है॥

उठ ! उठ ! उठ ! भरी नींदन में जगांय ले ! जाय नेंक दर्द नाय आवै। चौका बासन करके वाकूं रोट निगलवाये जब नीठ आनो भयो है॥ तैने कहा कियो आज ?

सोहनी । हमने तो आज बड़े किये ।

तुलसा। आपही आप खाय लिये । हमतो जब करैं तब अड़ौस पड़ोस सब में बांट के खांय ।

सोहनी। अये बांटती होगी हमने तो कभी कछु करतब देखो ना ।

तुलसा। तूं बड़ी करतबहीली है मोकूं तूं कहा करके भूल गई है। तू मोकूं तो मैं तोकूं । मेरी लूलुवा सी छोरि गई तैने तो वाऊ के हाथ पै एक बरो नाय धरो ।

सोहनी । अये दारी क्यों उघटवाये, पानी तेऊ कछू पतरी होयगो, सो तू वा दिना एक लोटा पानी कूं नट गई !

तोपै ऐसीही उघटा पैंची की बात रहै सांची कहने से आधीलड़ाई होय बीसन बात मेरे पेट में धरी हैं मैंका तोसी ओछी हूं॥

सोहनी । ओछी तू होगी हमतो खरी कहवैया डाढ़ी झार हैं ।

तुलसा । ओछी तू तेरे घर के, जुबान सँभाल के बोल ।

सोहनी । तेरे घर के ! बोलै कैसे हैं ?

(कुवाच्य प्रहार और रांडा निपूती होने लगी)

मोहनी । अयेदारी ! हैं ! हैं ! हैं ! यह क्या होय ! बात बातन में यह लड़ाई कैसी ? सीता नेक समझावै ना है ! यह का कर रही है दूनी दूनी होती जांय । और बढ़तीही चली जांय मर्द मानस सुनैंगे

तो का कहैंगे।

अरी मानो री मानो। हैं यह खसम पूत और भय्या भतीजेन कूं क्यों कोस रही है। देखो कोई छोटे बाप की बनती होय तो!

मोहनी। सीता तू देखिवे वारी है मेरी भायेली केते फूटे बताशे वा दिना आये और मेरी सास मोय उलाहना देवै लगी पर मैंने तो याई रीस के मारे जिकर तक नाय करी।

सीता। तेरी सास की भली कही वापै ऐसीही विगूथना रहैं। मैं का कहूं चली गई का वापै दूसरेन के ऐसेही झगड़े रहैं और आप ऐसी कंजूस है जो तेल के पूआ मेरे भेजे।

मोहिनी। चल भेजे होंगे या रँडरामने कूं छोड़! तैंने औरहू सुनी है?

सीता। कहा?

मोहिनी। वा मन्नालाल ते ने जीना में रात कूं अपने बेटा की बहू को हाथ पकड़ लियो और खोटी नियत विचारी सो चम्पालाल (मन्नालाल का बेटा) जहरखाय के सोय रह्यो। गंगा कहै ही कि डांक घर बैठो है पुलीस वारेन कूं खबर है गई सो दरोगा भी आय गयो है।

सोहनी। लड़ते लड़ते थक जाती है और रोकर घर कूं जाती है, सीता की छोरी रास्ते में खेल रही थी उसके सिरसे ओढ़नी का पल्ला भिड़ जाता है और सीता पकड़ लेती है)

सीता। (सोहनी से) मेरी छोरी पर पल्लो डार के जाय सो अपने खसम पूत पै न डारै। देखो री लुगाइयो। जुलम करै आंखन अगारी छोरी पै पल्लो डार कै निकरी है। जो काऊ को बुरो चीतैगी परमेसुर वाई को बुरो करैगो।

अपनेही लला पै न डारै ।

सोहनी । मैंने तो जान कर पल्लो डारो ना है भैना बिना बात कूं क्यों कोसै है ! जो कोई दूसरे की झूठी आत्मा सतावेगी वाको गाली वाई पै पड़ेगी ।

(सीता और सोहनी में लड़ाई होती है और गालियों के साथ हाय २ की धुनि बँधती है)

मोहनी । चलो हट जाओ रहन देउ। अरी तूही दो बात की बरदाश्त करले सीता मानै नाहै ! तेरो कूआ वारो (आगरे में एक कूआ में कोई भूत कल्पित कर रक्खा है) सब जगह आड़ो आवैगो जाऊ ने का जान के थोरई डारो होतो ।

(सोहनी का पति तीसरे पहर शौच से निवृत्त होते घर आया था सो घर को बंद देख कर नन्नूमल की हवेली में देखने गया लड़ाई का हल्ला गुल्ला सुन कर और अपनी बहू को चीखता देख कर जीनो में छुप कर खड़ा हो गया और लड़ाई का सब चरित्र सुनता रहा स्वपत्नी का कुव्यवहार देख कर उसका हृदय जलता था परन्तु होठ चबा चबा कर उसने वह समय बिताया) (तनिक चुप होतेही)

मूसेमल । (सोहनी का पति) छोरी कलावती ! का आज यहांई बैठी रहोगी क्या ?

(सोहनी छोरी कलावती को साथ लेकर लदर पदर जल्दी जल्दी जाती है)

मूसेमल । (घर पहुंच कर और पौढ़ी के किवाड बंद कर के चोटी पकड़ कर लकड़ी घूंसा मारता है) क्यों ....फिर जायगी........ (हाथ में लेकर एक दो तीन) (वाय बैला हो-

ता है और पड़ौस के बचाने को आते हैं और राजी से किवाड़ न खोलने पर किवाड़ उलट के एक पहलवान पड़ोसी घुस जाता है)

पड़ौसी। बदमाश। ऐसी हत्या छाई है तैंने जानी कोई पड़ौस में तो हैई ना याय जानते मार डारूं सो हमैं गवाही में बुलावैगो। मारौ रे!!

सब मारते हैं और पुलिस के कानस्टबल को खबर हो जाती है सो कोतवाली से हथकड़ी बेड़ी लेकर पड़ौसी और मूसेमल तथा सोहनी वग़ैरः को पकड़ कर ले जाते हैं और दो चार गवाहों को भी संग में घसीटते हैं।

इति प्रथमपरिच्छेदः

क्रमशः।

लेखिका महाशया श्रीमती जानकीदेवी जी शोक प्रकाशित करती हैं कि एक मात्र पत्रिका होने पर भी हमारी बहिनों के बहुत कम लेख छपते हैं। आशा कि अब और भी बहिनैं अवश्य लेख भेजेंगी॥

सम्पादिका।

बुराई का पराजय भलाई से।

महर्षि दयानन्द के नाम से आज कौन अनजान होगा। वह कहा करते थे कि यदि कोई मुझको हानि पहुंचावै तो भी मैं उसको बिना खेद के प्यार करूंगा।

जितनी बुराई वह मेरे साथ करैगा मैं उतनाही भलाई उसके संग करूंगा। ऐसा करने से केवल इतनाही नहीं होगा कि मैं बुराई से बचा रहूंगा बरन यह भी कि बुराई करनेवाले को भी मैं भला बना सकूंगा और बुराई उस से दूर चली जायगी।

एक दफे का हाल है कि यह महात्मा कहीं उपदेश कर रहे थे कि एक आदमी ने छेड़ने के मिस से उनको कुवाच्य कहे परन्तु स्वामी चुप रहे और उसकी मूर्खता का कुछ भी उत्तर नहीं दिया । जब गाली देने वाला थक कर चुप हुवा तब स्वामी ने कहा कि हे प्यारे यदि कोई किसी का अतिथि होता है तो उस की खातिरदारी करना गृहस्थ को ज़रूरी होता है और दस्तूर की बात है कि जिसके पास जो कुछ मौजूद होता है उसी से वह आतिथ्य [अतिथि सत्कार] करता है आगन्तुक को वही स्वीकार करना भी उचित है । आज हम तुम्हारे नगर में मेहमान हैं अतः तुमने जो हमारी खातिरदारी की है वह हमको स्वीकार हैं हम आपके सत्कार से बहुत तृप्त हैं । ईश्वर आपको सुबुद्धि दे और सदा आनंदित रक्खे ॥

महर्षि के इन मधुर बचनों ने उस पुरुष के आत्मा पर तड़ित [विजुली] की भांति असर किया । और वह तत्काल ही उनके पैरों पास गिर पड़ा और अपने कर्तव्य पर बहुत पश्चात्ताप किया । इतनाहीं नहीं बरन उसने अपने शेष जीवन को बड़ी धर्मात्मता और सत्यशीलता से व्यतीत किया ।

सच है महात्मा जन सदा बुराई का पराजय भलाई से करते हैं ।

पाठिका बहिनों ! हम सब को भी उचित है कि बुराई को सदा भलाई से बदल देने की कोशिश करती रहैं ।

बूझो तो क्या है ?

बंशीध्वनि बंशी बिना, करत सुनत सब कोय ।
पीतबसन यह श्यामतन, कौन बस्तु अस होय ? ॥१॥
उदय होत रवि के बड़ो, अस्त होत गुरु जान ।
बीच दिवस लघु देखिये को अस बस्तु जहान ? ॥२॥
न्यायी द्वारा पूछि कै, नीक करै अति न्याय ।
सब के घर वह रहत है, दीजिय बस्तु बताय ? ॥३॥
सत्य सत्य बोलै सदा, पल न करै विश्राम ।
होत लाभदायक अधिक, कहहु बस्तु कर नाम ? ॥४॥
रैन अँधेरी मनहु दिन, दिन अँधार जनु रात ।
कवन बस्तु संसार महँ, उलटो जाहि लखात ? ॥ ५ ॥

संदेशमाला ।

स्थानिक ॥ आर्य्य (हिंदू) धर्म का अग्निहोत्रादि नित्य कर्म है । वर्ष में हम लोगों के अनेकों त्योहार इन्हीं शुभ कर्म्मों के लिये होते हैं । हर्ष का विषय है कि हमारी पुत्रीशाले में भी प्रत्येक त्योहार को कन्याओं और स्त्रियों का प्रीति सम्मिलन और यज्ञ होना आरम्भ हो गया है । गत बसन्त के दिन यज्ञ हुवाही था । तदनन्तर शिव व्रत के दिन भी उसी प्रकार हवन हुवा था और कुमारी मङ्गलावती के मनोहर व्याख्यान हुवे, कन्याओं ने मिल कर भजन गाये । और धर्मचर्चा भी होती रही । होली को भी अग्निहोत्र और भजन हुवे । बड़ा आनन्द रहा ।

ईश्वर सब भाई बहिनों में ऐसेही आनन्द स्थापन करैं ।

होली को यहां की आर्य्यसमाज में भी बड़े समारोह से यज्ञ हुआ और भजन गान पूर्वक बड़े आनन्द की सभा हुई ।

विविध । आज कल हिन्दुस्तान के ३०६ मर्द और १२ स्त्रियां विलायत में शिक्षा पा रही हैं ।

श्री महाराज जम्बू की राजपुत्री के विवाह में पांच लाख का सामान दहेज में दिया गया ।